राष्ट्रोपनिषत्

रचयिता
आचार्य डॉ. नारायणशास्त्री काङ्कर विद्यालङ्कार
(महामहिम–राष्ट्रपति–सम्मानित)

हिन्दी-रूपान्तरण-कर्त्री
सौ. श्रीमती इन्दु शर्मा
एम.ए., शिक्षाचार्या

अंग्रेजी-रूपान्तरण-कर्त्ता
महामण्डलेश्वरः स्वामी श्री ज्ञानेश्वरपुरी
विश्वगुरुदीप आश्रम शोध संस्थानम्, जयपुरम्

अन्नं वस्त्रं गृहं शिक्षा, यदा नैव मिलेत् तदा ।
कथमुत्पततां नृणाम्, उल्लासो राष्ट्रपर्वसु ? ॥२२॥

अन्न, वस्त्र, गृह और शिक्षा जब नहीं मिले, तब लोगों का राष्ट्रपर्वों में उल्लास कैसे उत्पन्न हो ?

How can people enjoy the holidays when they have no food, cloth, home or education?

अन्यत् किञ्चिद् न याचेऽहं , याचे त्वन्मतमेव हि ।
देहि मे मतमेकं स्वं, दास्ये ते सर्वमीप्सितम् ॥२३॥

निर्वाचन में खड़ा होने वाला प्रत्याशी मतदाता से कहता है कि – मैं तुझसे और कुछ नहीं माँगता, मैं तो तेरा मत ही माँगता हूँ। तू मुझे अपना एक मत दे दे और फिर मैं तुझे तेरा सब कुछ इच्छित दे दूँगा।

The candidate says to the voters during the election: “I don't need anything but a vote from you. Give me your vote, and I shall give you whatever you desire.”

अन्यस्य निन्दया नैष, स्वार्थस्तुच्छोऽपि सिध्यति ।
यद्येवं निन्दकाः सर्वे, सुखिनः स्युः सदैव हि ॥२४॥

दूसरे की निन्दा करने से कुछ भी स्वार्थ सिद्ध नहीं होता है। यदि इस तरह होता हो अर्थात् स्वार्थ सिद्ध होता हो तो सभी निन्दा करने वाले सदा ही सुखी हो जावें।

No selfish desire is fulfilled by defaming others. If it would be like that then all abusive people would be happy.

अन्धानुसरणे क्वापि, स्वविवेकं त्यजेन्न हि ।
अन्यथा निन्दितो भूत्वा, पश्चात् तपति भूरिशः॥२५॥

दूसरों का अनुसरण करने में व्यक्ति को कहीं भी अपना विवेक नहीं छोड़ना चाहिए, नहीं तो अपना विवेक छोड़ देने से व्यक्ति निन्दित होकर बहुत बहुत पश्चाताप करता है।

The one who follows others should never leave his common sense. Otherwise he will be very sorry when blamed.

अन्यायोपार्जितैर् द्रव्यैर्, भगवान् न प्रसीदति ।
सदाचारेण सन्तुष्टो, भक्तानां स प्रपालकः ॥२६॥

अन्याय से पैदा किये गये द्रव्यों से भगवान् कभी प्रसन्न नहीं होते हैं । वे तो भक्तों के सदाचरण से ही सन्तुष्ट होकर उनके प्रपालक बनते हैं ।

God is never happy by the things achieved through injustice. Being satisfied with the proper behaviour of his devotees, he becomes their guardian.

अन्येषां भागमाच्छिद्य, यो न भुङ्क्ते ददाति न ।
तस्मादतितरां मूढः, कः स्यात् पाप-समर्जकः॥२७॥

दूसरों के भाग को छीन कर जो न भोगता है और ना देता है, उससे ज्यादा पाप अर्जित करने वाला मूर्ख कौन होगा ।

Who is more stupid than the sinful person who steals the things of others but neither enjoys them nor presents them (to others)?

अन्येषामितिहासं ये, जानन्तोऽपि निजं न हि ।
विज्ञातुं प्रयतन्ते ते , विद्वांसो न कदाचन ॥२८॥

जो दूसरों का इतिहास जानते हुए भी अपना इतिहास जानने के लिए प्रयत्न नहीं करते हैं, वे कभी भी विद्वान् नहीं होते हैं ।

One will never be a scholar if he knows the history of other (countries) but does not even try to know the history of his country.

अन्योन्यमीप्सितं यत्र, पूर्यते सर्वथा द्रुतम् ।
सुखं शान्तिर्न किं तत्र, मिलतीति निगद्यताम् ॥२९॥

जहाँ परस्पर एक दूसरे का मनोवाञ्छित, सब प्रकार से बिना विलम्ब के शीघ्र पूर्ण कर दिया जाता है, क्या वहाँ सुख-शान्ति नहीं मिलती है ? कहिये ।

Do tell, is there no peace and happiness where people fulfil all of each other wishes quickly and promptly?

अन्योन्यं वञ्चतां नाम, दुःशक्येश्वरवञ्चना ।
अनिशं वञ्चना-चक्रे, पतितः शं न विन्दन्ति ॥३०॥

आपस में एक दूसरे को भले ही धोखा दे दिया जाय, पर ईश्वर को धोखा देना असम्भव है। रात दिन धोखा देने के चक्कर में पड़ा हुआ व्यक्ति कभी भी कल्याण प्राप्त नहीं करता है ।

People can cheat each other, but it is impossible to cheat God. The person engrossed in cheating all day and night can never prosper.

अपराधं करोत्यन्यस्, तद् दण्डं विन्दते परः ।
रावणेन हृता सीता, समुद्रो हि न्यबध्यत ॥३१॥

अपराध कोई और करता है तो उसका दण्ड कोई और पाता है । रावण ने सीता का हरण किया तो समुद्र बाँधा गया ।

Offence/crime is done by one, but somebody else gets punished. Ravan had kidnapped Sita, but the Ocean got tied up.

अपराधं स्वयं कृत्वा, परं यो दूषयेद् जनः ।
ततो महापराधी कः, परो जगति लप्स्यते ? ॥३२॥

जो आदमी खुद अपराध करके दूसरे को दोष दे तो उससे बड़ा कौन अपराधी इस संसार में मिलेगा ?

Who is the bigger criminal in this world than the one who does the crime but blames others?

अपराधेषु लिप्तानां, प्रवेशो जायते यदा ।
राजनीतिस्तदा दुष्टा, भूत्वा किं न विनाशयेत् ? ॥३३॥

अपराधों में लिप्त रहने वालों का जब प्रवेश हो जाता है, तब राजनीति क्या प्रदूषित बन कर किसको विनष्ट नहीं कर देती ?

Will not the politics become destructive if polluted by the criminals?

अपव्यये करः कश्चित्, प्रवर्त्त्य एव सत्वरम् ।
सर्वकल्याण कार्येषु, विनियोज्यः करश्च सः ॥३४॥

फिजूलखर्च पर शीघ्र ही कोई टैक्स लगाकर उस टैक्स से प्राप्त धनराशि को सार्वजनिक कल्याण के कार्यों में लगा देनी चाहिये ।

Taxes should be immediately implemented on useless expenditures and used for the benefits of all.

अभावे न सुखं शान्तिः, तृष्णायामपि नो तथा ।
द्वयोरेवैतयोर्नाशे , सुखं शान्तिर्मिलेद् ध्रुवम् ॥३५॥

किसी भी प्रकार के अभाव के रहने पर और तृष्णा के भी रहने पर सुख-शान्ति नहीं होती । सुख - शान्ति तो इन दोनों अभाव और तृष्णा के नाश होने पर ही निश्चित रूप से मिला करती है ।

If there is any kind of need or greed, there will be no peace and happiness. Peace and happiness can be surely achieved when both greed and need are destroyed.

अमूर्त्तमस्ति मस्तिष्कं, तथैव तत्क्रियाऽपि च ।
तत्फलं किन्तु मूर्त्तं हि, किं नैतद् विस्मयावहम् ॥३६॥

मस्तिष्क अमूर्त्त है और इस मस्तिष्क की क्रिया भी वैसी ही अमूर्त्त है । परन्तु उस मस्तिष्क का फल मूर्त्त ही होता है । क्या यह विस्मयकारी नहीं है ?

The mind is formless, and its work is formless too. But the results of the mind have a form. Isn't that surprising?

अयं मानव - देहो न, सुलभ्योऽस्ति पुनः पुनः ।
अस्माच्छ्रेष्ठतमं किञ्चिद् , नान्यदस्ति कदाचन ॥३७॥

यह मानव-शरीर बार बार सुलभ होने वाला नहीं है। इससे श्रेष्ठतम अन्य कोई कदापि नहीं है ।

The human body will not always be easily available. There is no other (kind of body) greater than this.

अर्थ एवोन्नतेर्मूलं, तस्यापेक्षा न कस्य हि ? ।
सीमातिगः परं सोऽर्थः, सर्वानर्थं करोति हि ॥३८॥

अर्थ अर्थात् धन ही उन्नति का मूल होता है। उसकी अपेक्षा अर्थात् आवश्यकता किसे नहीं होती है किन्तु सीमा का अतिक्रमण किया हुआ वह अर्थ अर्थात् धन सभी प्रकार के अनर्थ कर दिया करता है ।

Wealth is the root of progress. Who does not need it, but if the boundary is crossed, then it will be the cause of destruction.

अर्थज्ञानं विना शब्द,– प्रयोगो न प्रशस्यते ।
तादृशाचरणात् किं न, प्रयोक्ता निन्द्यते क्वचित् ? ॥३९॥

अर्थ जाने बिना शब्द का किया गया प्रयोग प्रशंसनीय नहीं होता है। वैसा आचरण करने से क्या प्रयोग करने वाला कहीं निन्दित नहीं किया जाता है ?

It is no commendable to use the word without the knowledge of its meaning. Will (,) not the one who uses it be slandered?

अर्थज्ञानं विना शब्द ,–प्रयोगोऽनर्थकृद् मतः।
अशुद्ध–वर्त्तनी चापि, हास्यायैव प्रकल्पते ॥४०॥

अर्थ जाने बिना किसी शब्द का प्रयोग करना अनर्थकारी माना गया है और उस शब्द की अशुद्ध वर्तनी भी हास्याकारक बन जाती है ।

To use a word without knowing its meaning can be disastrous, but writing it down wrongly is laughable.

अर्थ–स्थितिर्दृढा चेत् स्याद् , विनश्येच्च महार्घता ।
इच्छायास्तर्हि कस्यापि, भवेद् भङ्गः कदापि न ॥४१॥

यदि सबकी आर्थिक स्थिति सुदृढ़ बन जाये और महँगाई विनष्ट हो जाये तो किसी की भी इच्छा का भङ्ग कभी न हो ।

If the economic condition of all is strong and inflation is no more, then nobody's desire will not be fulfilled.

अविवेकी सदा दुःखी, विवेकी सर्वथा सुखी ।
अतीतं फलमदृष्ट्वा, कस्योत्थानं हि सम्भवम् ? ॥४२॥

विवेकहीन मनुष्य सदा दुःखी रहता है और विवेकवान सर्वथा सुखी । अतीत परिणाम को देखे बिना कार्य करने वाले किस मनुष्य का उत्थान संभव है ?

Unreasonable people are always unhappy and reasonable ones happy. Is it possible for anyone to prosper without looking over the past outcomes?

अशिष्टाचरणं नैव , कार्यं कुत्रापि यात्रिभिः ।
अन्यथा तेन हानिः स्यात्,प्राणानामपि संशयः ॥४३॥

यात्रियों को कहीं भी अशिष्ट आचरण नहीं करना चाहिये। अन्यथा उसमें उनको हानि हो सकती है और प्राणों का भी संशय बना रहता है ।

Travellers should not behave rudely anywhere. Otherwise, they can be hurt, or even their life can be in jeopardy.

असन्तुष्टो यथा न स्याद्, शिक्षकश्च चिकित्सकः ।
स्वजीवन – सुरक्षार्थं, तथा जागर्तु शासनम् ॥४४॥

शिक्षक और चिकित्सक जिस प्रकार असन्तुष्ट न हों अपने जीवन की सुरक्षा के लिए शासन को उस प्रकार जागरूक रहना चाहिये ।

The government should be vigilant for the safety of the lives of teachers and doctors in such a way that they are not dissatisfied.

असन्तोषो महान् दोषः, सोऽनुशासन–भञ्जकः ।
विनाऽनुशासनं किञ्चित्, दलं दीर्घं न जीवति ॥४५॥

असन्तोष एक महान् दोष है। वह अनुशासन को भङ्ग करने वाला है। अनुशासन के बिना कोई भी दल दीर्घजीवी नहीं बनता है ।

Unsatisfaction is one great weakness. It can destroy the order, and without the order, no party can last long.

असन्तोषो यथा न स्यात्, परिवारे तु कस्यचित् ।
गृहपतिस्तथा तिष्ठेत्, सावचेताः सदैव हि ॥४६॥

परिवार में किसी को जिस प्रकार असन्तोष पैदा नहीं हो, उस प्रकार का प्रयत्न करने के लिये गृहपति को सदा ही सावधान रहना चाहिये ।

The head of the household should always be alert and try that nobody should be dissatisfied in the family.

असन्तोषं विना कश्चिद्, आतङ्को नैव जायते ।
क्रान्तिरपि च तेनैव, हेतुना जायते पुनः ॥४७॥

किसी असन्तोष के बिना आतङ्क पैदा नहीं होता है और फिर क्रान्ति भी उसी असन्तोष के कारण पैदा होता है ।

Without discontent, there is no terrorism. The revolution was the result of the discontent.

असम्बद्धे जने दत्तं, भाषणं स्याद् निरर्थकम् ।
पुनस्तदेव भाषेत, यत् कृत्वा दर्शयेत् स्वयम् ॥४८॥

असम्बद्ध व्यक्ति को दिया गया भाषण निरर्थक हो जाता है। फिर भाषण वही दिया जाना चाहिये, जिसके अनुसार स्वयं करके दिखा दे ।

There is no sense in giving the lecture to an uninterested/wrong person. The lecture should be given there where one can show it personally.

असवर्णः सवर्णो वो, यः कोऽपि निर्धनो भवेत् ।
कष्टं तस्यापहर्तुं न, पृष्ठे तिष्ठेत् प्रशासनम् ॥४९॥

असवर्ण हो या सवर्ण हो जो कोई भी निर्धन हो उसका कष्ट दूर करने में प्रशासन को पीछे नहीं हटना चाहिये ।

The government should not give up in helping the poor whether they are from the golden or non-golden caste.

असौ नेता स्वयम्भूः किं, योऽन्यं मूर्खं न बुध्यताम् ।
अपि बृहस्पतिस्तस्य, सम्मुखे तुच्छ एव हि ॥५०॥

वह स्वयम्भू नेता ही क्या ? जो दूसरों को मूर्ख न समझे । उसके सामने तो देवगुरु बृहस्पति भी तुच्छ ही है ।

Is that a self-proclaimed politician that doesn't treat others as stupid ones?

Does not a self-proclaimed politician treat others as stupid ones?
In front of him, evenguru of the gods, Brhaspati is nobody.

अस्ति सङ्कीर्णता यत्र, नास्ति यत्र गभीरता ।
अनेकोपद्रवाणां स, धर्मो भवति कारणम् ॥५१॥

जिसमें संकीर्णता होती है और गम्भीरता नहीं होती, वह धर्म अनेक उपद्रवों का कारण बन जाता है ।

Broadmindedness cannot be where there is narrow mindedness. Narrow thinking is the cause of all disturbances/disorders.

आङ्ग्ली विदेशि–व्यवहार–भाषा, हिन्दी स्वदेशि–व्यवहार–भाषा ।
प्रशासकीया यदि नीतिरेषा, भाषाविवादः स्वयमेव शाम्येत् ॥५२॥

अंग्रेजी विदेशियों से व्यवहार करने की भाषा, हिन्दी स्वदेशियों से व्यवहार करने की भाषा है, यदि यह प्रशासन कर्त्ताओं की नीति बन जाये तो भाषाविवाद स्वयं ही शान्त हो जाये ।

When administrators accept that English is the language to be used with foreigners and Hindi language to be used with Indians, then the language conflict will disappear on its own.

आचार एव कस्यापि, संस्कृतेः प्राक् प्रकाशकः ।
स्वाचारोऽतस्तथा रक्ष्यो, यथा कीर्त्तयेत संस्कृतिः ॥५३॥

आचरण ही किसी भी संस्कृति को सबसे पहले प्रकट करने वाला होता है । अतः अपना आचरण उस तरह रखना चाहिये जिससे संस्कृति बता दी जाय ।

Any culture will be foremostly shown through the behaviour. Therefore, our behaviour should show our culture.

आचारे व्यवहारे च, पूतं यस्य न जीवनम् ।
सन्तुष्टां जनतां कर्तुं, किं स शास्ता प्रभुः क्वचित् ? ॥५४॥

जिसका जीवन आचरण और व्यवहार में पवित्र नहीं होता है, क्या वह शासक जनता को सन्तुष्ट करने में कहीं समर्थ है ?

Is that ruler capable of satisfying the people whose character and behaviour are not pure?

आजीविका तथाऽऽवासो, व्यक्तये स्यात् सदैव हि ।
आभ्यां द्वाभ्यां विना व्यक्तिः, सुख-शान्त्या न तिष्ठति ॥५५॥

आजीविका तथा आवास व्यक्ति के लिये सदा ही होना चाहिये। इन दोनों के बिना व्यक्ति सुख-शान्ति से नहीं रहता है ।

One should always have a job and home. Otherwise, one cannot have peace and happiness.

आज्ञां यः सर्वकारस्य, समये नैव पालयेत् ।
सद्यः स दण्डनीयोऽस्ति, सर्वकार-विनिन्दकः ॥५६॥

जो सरकार की आज्ञा को समय पर नहीं पाले, सरकार की निन्दा करने वाला वह तत्काल दण्ड देने के लायक है ।

The one who does not follow the orders of the government on time and complains about the government should be immediately punished.

आत्मज्ञानं विना कोऽपि, समदृष्टिर्न सम्भवेत् ।
विश्वप्रियं विधातुं तु, समदृष्टिर्हि सक्षमा ॥५७॥

आत्मज्ञान के बिना कोई भी समदृष्टि नहीं हो सकता । अपने आपको विश्वप्रिय बनाने के लिये तो समदृष्टि ही सक्षम है ।

There cannot be an equal vision without Atmagyana (the knowledge of Self). Only the one with an equal vision can be dear to all.

आत्मदाहमनुष्ठाय , या स्त्री सञ्जायते सती ।
तन्नामतः समाजोऽयं, स्वार्थं साधयते बहु ॥५८॥

आत्मदाह करके जो स्त्री सती हो जाती है, उसके नाम से यह समाज बहुत-बहुत स्वार्थ साधता है ।

This society, in the name of Sati, a wife who commits suicide after the death of her husband, fulfils many of its selfish desires.

आत्मदोषमपश्यंश्चेद् , अन्यं दूषयते जनः ।
स्वार्थसिद्धिर्न तेन स्याद्, व्यक्ता स्याच्च स्वमूढ़ता ॥५९॥

यदि अपना दोष न देखते हुए दूसरों को दोष देते हैं तो उससे उसका स्वार्थ सिद्ध नहीं होता है और उसकी मूढ़ता भी प्रकट होती है ।

The work is not done, and only stupidity is shown by the one who does not look at his mistakes but blames others.

आत्म–प्रशंसकः क्वापि, प्रतिष्ठां लभते न हि ।
पर–प्रशंसकः किन्तु , प्रशस्यो भवति ध्रुवम् ॥६०॥

अपनी प्रशंसा करने वाला व्यक्ति कहीं भी प्रतिष्ठा प्राप्त नहीं करता है, किन्तु दूसरों की प्रशंसा करने वाला निश्चित रूप से प्रशंसनीय बन जाता है ।

The one who praises himself never gets respect, but the one who praises others surely becomes appreciable.

आत्मभाषां परित्यज्य, येऽन्यभाषामुपासते ।
मूढ़ास्ते संस्कृतिं स्वीयां, कथं ज्ञास्यन्ति दुर्भगाः ॥६१॥

जो अपनी भाषा छोडकर दूसरों की भाषा की उपासना करते है, वे दुर्भग मूढ़ व्यक्ति अपनी संस्कृति को कैसे जानेंगे ?

How will that unfortunate foolish person who renounces his language and worships/uses another, know his culture?

आत्म–राष्ट्रं प्रियं यस्य, नाकार्यं कुरुते हि सः ।
प्राणाहुति–प्रदानेऽपि, पृष्ठे तिष्ठति न क्वचित् ॥६२॥

जिसको अपना राष्ट्र प्रिय होता है, वह नहीं करने का कार्य नहीं करता है। वह अपने प्राणों की आहुति देने में भी पीछे नहीं रहता है।

The one who loves his country will never do wrong deeds. He is always ready even to give his life.

आत्मवत् सर्वभूतेषु, नानुभूतिर्भवेत् क्वचित् ।
मांसाहारात् कथं तावद्, व्यक्तिर्मूढो विरज्यताम् ?॥६३॥

जब तक सभी प्रणियों में अपने समान समझने की अनुभूति कहीं न हो, तब तक मूढ़ व्यक्ति मांसाहार से कैसे विरक्त हो ?

How will the foolish person be free from meat-eating if he does not have the experience/feelings of equality with all living beings?

आत्मवत् सर्वभूतेषु, व्यवहार्यं सदैव हि ।
बुभुक्षा च पिपासा च, सर्वेषामेकसन्निभा ॥६४॥

सभी जीवों के साथ सदा ही अपने समान व्यवहार करना चाहिये । भूख और प्यास सभी जीवों की एक समान होती है ।

One should behave equally with all. All feel the hunger and thirst equally.

आत्मविद्यां स्वशिष्येषु, द्रुतं सङ्क्रामयन्ति ये ।
विरलाः शिक्षकास्ते हि, सदा सर्वत्र पूजिताः ॥६५॥

जो अपनी विद्या को अपने शिष्यों में अविलम्ब शीघ्र सङ्क्रान्त कर दिया करते है, ऐसे सर्वत्र पूजित शिक्षक तो निश्चित रूप से विरल ही होते हैं ।

Rare is that respectful teacher who gives his knowledge to the students quickly, without any delay.

आत्मानुशासनं यत्र, भ्रष्टाचारो न तत्र हि ।
भ्रष्टाचारश्च यत्रास्ति, सुखं शान्तिर्न तत्र हि ॥६६॥

जहाँ आत्मानुशासन होता है, वहाँ भ्रष्टाचार नहीं होता और जहाँ भ्रष्टाचार होता है, वहाँ सुख शान्ति नहीं पायी जाती ।

Where there is self-discipline, there is no corruption. Where there is corruption, there is no peace and happiness.

आत्मीयता – युता दृष्टिर्, यदा सर्वत्र जायते ।
समस्याः सकलाः किं न, विनश्यन्ति स्वयं तदा ? ॥६७॥

जब सब में आत्मीयता से युक्त दृष्टि हो जाती है, तब क्या सभी समस्यायें अपने आप विनष्ट नहीं हो जाती है ?

Don't all problems disappear when people start looking at each other with empathy?

आत्मीयतां विना किञ्चित्, किं कार्यं क्वापि सिध्यति ? ।
आत्मीयता न यावद् स्यात्, तावत् कार्यं न सिध्यति ॥६८॥

आत्मीयता के बिना क्या कोई कार्य कहीं सिद्ध होता है ? जब तक आत्मीयता नहीं होती, तब तक कार्य सिद्ध नहीं होता है।

Can any work be successful anywhere without affinity/close relationship? Until there is affinity, work can not be done successfully.

आत्मीया इव भूत्वा ये, वञ्चयन्ते सुहृज्जनान् ।
अन्विष्टा अपि तत्तुल्याः, प्राप्येरन् पापिनो नहि ॥६९॥

जो आत्मीय की तरह बन कर सुन्दर हृदय वाले जनों को ठगते हैं, ढूँढ़ने पर भी उनके जैसे पापी व्यक्ति नहीं मिलते हैं ।

It is very hard to find a greater sinner than the one who pretends to be near and dear and then robs the good-hearted people.

आदर्शो यादृशः स्वस्य, परेषां किं न तादृशः ?।
कनिष्ठा अनुयान्त्येव, ज्येष्ठान् सर्वत्र सर्वथा ॥७०॥

जैसा स्वयं का आदर्श होता है क्या दूसरों का वैसा नहीं होता है ? छोटे लोग तो सर्वत्र, सब प्रकार से बड़े लोगों का ही अनुसरण करते है ।

Isn't the respect of others done in the same way as to oneself? Everywhere people follow/copy the behaviour of the famous ones in every way.

आदानं च प्रदानं च, विचाराणां परस्परम् ।
विना सम्मेलनं किं स्याद् ,अन्योपायैः कदाचन ? ॥७१॥

विचारों का आपस में आदान और प्रदान क्या सम्मेलन के बिना अन्य उपायों से कभी हो सकता है ?

Is there any other way to reach a conclusion/solution without the gathering/conference/meeting where the ideas can be presented and exchanged?

आदावेव यदि व्याधिः, समूलं नापवार्यते ।
तर्हि वृद्धिं गतः किं स, दुर्वारो नैव जायते ? ॥७२॥

यदि बीमारी शुरू में ही जड़ सहित नहीं मिटायी जाती है तो क्या बढ़ी हुई वह बीमारी मुश्किल से मिटायी जाने वाली नहीं बन जायेगी ?

If the sickness is not uprooted in the beginning, will it not be very difficult to remove it when is fully grown/active?